डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए, हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, अष्टम पत्र

स्वच्छन्दतावाद

ईसा की पाँचवीं शताब्दी से पन्द्रहवीं शताब्दी तक प्रायः समूचे यूरोपीय साहित्य में धर्म का प्रभुत्व विद्यमान रहा। नीति – नियमों का सशक्त बंधन था। समाज एवं साहित्य में प्रतिभा, मौलिकता, स्वच्छन्द कल्पना इन सबके लिए स्थान ही नहीं बच पाया था। इस कालावधि को विद्वानों ने 'अंधकार युग' तक की संज्ञा भी दी है।

पंद्रहवीं शताब्दी के बाद के काल को 'पुनर्जागरण काल' (1530 – 1750 ई.) के नाम से अंग्रेजी साहित्य में जाना जाता है। इस पुनर्जागरण काल में ईश्वर के साथ – साथ मानव के प्रति भी एक नया दृष्टिकोण उभरा। मानव के प्रति बढ़ती आस्था का सुपरिणाम एक नवीन संस्कृति के रूप में प्रकट हुआ। इसी काल में अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियां प्राप्त हो सकीं। 1497 ई. में वास्कोडिगामा ने नई दुनिया खोजकर पूर्व और पश्चिम को एकदूसरे के निकट ला दिया। गैलीलियो ने भी कोपरनिकस की तरह घोषित किया कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। इसी समय न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण बल का सिद्धांत खोज निकाला। इन सभी उपलब्धियों से धार्मिक कट्टरता कमजोर पड़ गई और सोचने – विचारने की नई दिशाएँ खुल गईं।

स्वच्छन्दतावाद का मूल प्रस्थान बिंदु है 1789 में हुई फ्रांसीसी क्रांति। अनेक विद्वानों ने इस क्रांति का मूल 1776 ई. की अमरीकी क्रांति को माना है। स्वच्छन्दतावाद का फ्रांसीसी क्रांति से गहरा संबंध है। फ्रांसीसी साहित्यकार वाल्टेयर और चिंतक रूसो के विचारों को लेकर फ्रांसीसी क्रांति आगे बढ़ी। वाल्टेयर ने अपनी रचनाओं द्वारा राजतंत्र और चर्च का विरोध करते हुए लिखा कि यह मनुष्य के विकास और प्रगति में बाधा पैदा करता है। जिसे तत्कालीन राजतंत्र ने निंदनीय बताया और उसे अनेक प्रकार की यातनाएं दी गईं। रूसो ने अपने विश्वप्रसिद्ध 'सामाजिक समझौते' के सिद्धांत द्वारा यह बताया कि जो शासन समाज को 'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व' का अवसर प्रदान नहीं कर सकता, उसे जनता का प्रतिनिधित्व करने का कोई अधिकार नहीं है। इस प्रकार से रूसो ने विद्रोह का खुला आह्वान किया। 1789 ई. की फ्रांसीसी क्रांति समग्र जीवन – दर्शन की क्रांति के रूप में उभरी। पश्चिमी साहित्य जगत में पुनर्जागरण काल एक आंदोलन की तरह आया।

अठारहवीं शताब्दी के अंत तक पहुँचते – पहुँचते स्वच्छन्दतावाद संघर्ष और अवरोध के लम्बे उतार – चढ़ाव के बाद समूचे यूरोपीय समाज को एक नया क्रांतिकारी जीवन – दर्शन प्रदान करता है। स्वच्छन्दतावाद मात्र अंग्रेज़ी साहित्य तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि एक नई चिंतनधारा के रूप में फ्रांसीसी और जर्मनी साहित्य, राजनीति, दर्शन, सांस्कृतिक जीवन इत्यादि को भी प्रभावित करने लगा। स्वच्छन्दतावादी आंदोलन का मूल उद्देश्य मुक्ति है। स्वच्छन्दतावाद एक विशाल यूरोपीय आंदोलन के रूप में उभरकर सामने आया। तानाशाह राजतंत्र के विरुद्ध उदार

जनतंत्र की स्थापना के लिए लड़ाई लड़ी गई। इसका प्रभाव समूचे यूरोप में हुआ। फ्रेंच, जर्मन, आदि भाषाओं के साहित्य में स्वच्छन्दतावाद एक आंदोलन बन कर उभरा। यूरोप के अन्य देशों के समान इंग्लैंड में स्वच्छन्दतावादी विचार – आंदोलन का जन्म आंदोलन या विद्रोह के रूप में में नहीं होता है। अठारहवीं शताब्दी के यूरोप में पनपने वाली नित्य नवीन प्रवृत्तियों, विचारों का शांतिपूर्ण और धीरे – धीरे विकास हुआ था। यह स्वाभाविक विकास ज्ञान – विज्ञान, नए – नए उद्योगों के आलोक में प्राचीन परंपरा के प्रति उचित समझ तथा अपने उदारवादी विचारों के प्रति लगातार सचेत होकर संघर्ष करने के कारण अंग्रेज साहित्यकारों को ही नहीं इंग्लैंड के मध्य वर्ग को स्वमेव प्राप्त होता चला गया। यही कारण है कि फ्रांसीसी, जर्मनी स्वच्छन्दतावाद के समान अंग्रेजी स्वच्छन्दतावाद आक्रामक गति वाला न होकर लोक – कलाओं, परंपराओं एवं स्वच्छन्द कल्पनाओं के सहयोग से इंग्लैंड में पनपा। इस सुविस्तृत स्वच्छन्दतावाद को अध्ययन की सुविधा हेतु दो खंडों में विभाजित किया जाता है – पूर्व स्वच्छन्दतावादी युग और मुख्य स्वच्छन्दतावादी युग। स्वच्छन्दतावादी प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं –

विद्रोह की भावना, आत्मानुभूति, कल्पना, विस्मय एवं रहस्यात्मकता, प्रकृति – प्रेम, व्यक्तिवाद, प्रेम और सौंदर्य, अतीतोन्मुखता, प्रगीतात्मकता, बिम्ब आदि।